कक्षा:१०, काव्य खंड: पाठ ४, प्रथम सत्र

कविता: आत्मकथ्य

कवि: श्री जयशंकर प्रसाद

योजना: डॉ. सुमन द्विवेदी

जन्म- 30 जनवरी, 1889

श्री जयशंकर प्रसाद

मृत्यु- 14 जनवरी 1937 (उम्र 47)

परिचय

- **जयशंकर प्रसाद** (३० जनवरी १८८९- १४ जनवरी १९३७) हिन्दी कवि, नाटकार, कथाकार, उपन्यासकार तथा निबन्धकार थे।
- वे हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं।
- उन्होंने हिंदी काव्य में छायावाद की स्थापना की जिसके द्वारा खड़ी बोली के काव्य में कमनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई और वह काव्य की सिद्ध भाषा बन गई।
- वे एक युगप्रवर्तक लेखक थे जिन्होंने एक ही साथ कविता, नाटक, कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में हिंदी को गौरव करने लायक कृतियाँ दीं।

परिचय

- कवि के रूप में वे निराला, पन्त, महादेवी के साथ छायावाद के चौथे स्तंभ के रूप में प्रतिष्ठित हुए है।
- नाटक लेखन में भारतेंदु के बाद वे एक अलग धारा बहाने वाले युगप्रवर्तक नाटककार रहे जिनके नाटक आज भी पाठक चाव से पढते हैं।
- उन्हें 'कामायनी' पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ था।

जीवन परिचय

- प्रसाद जी का जन्म माघ शुक्ल 10, संवत् 1946 वि. में काशी के सरायगोवर्धन में हुआ।
- इनके पितामह बाबू शिवरतन साहू दान देने में प्रसिद्ध थे और इनके पिता बाबू देवीप्रसाद जी कलाकारों का आदर करने के लिये विख्यात थे।
- **काशी की जनता काशीनरेश के बाद 'हर हर महादेव' से बाबू देवीप्रसाद का स्वागत करती थी।**
- किशोरावस्था के पूर्व ही माता और बड़े भाई का देहावसान हो जाने के कारण १७ वर्ष की उम्र में ही प्रसाद जी पर आपदाओं का पहाड़ टूट पड़ा।

जीवन परिचय

- घर के वातावरण के कारण साहित्य और कला के प्रति उनमें प्रारंभ से ही रुचि थी।
- **कहा जाता है कि नौ वर्ष की उम्र में ही उन्होंने 'कलाधर' के नाम से व्रजभाषा में एक सवैया लिखकर 'रसमय सिद्ध' को दिखाया था।**

जयशंकर प्रसाद जी का योवन जीवन:-

संस्करण

- कालक्रम के अनुसार **'चित्राधार'** प्रसाद का प्रथम संग्रह है।
- इसका प्रथम संस्करण 1918 ई. में हुआ।
- इसमें कविता, कहानी, नाटक, निबन्ध सभी का संकलन था और भाषा ब्रज तथा खड़ी बोली दोनों थी।
- लगभग दस वर्ष के बाद 1928 में जब इसका दूसरा संस्करण आया, तब इसमें ब्रजभाषा की रचनाएँ ही रखी गयीं। साथ ही इसमें प्रसाद की आरम्भिक कथाएँ भी संकलित हैं।

छायावाद की स्थापना

- जयशंकर प्रसाद ने हिंदी काव्य में छायावाद की स्थापना की जिसके दवारा खड़ी बोली के काव्य में कमनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई और वह काव्य की सिद्ध भाषा बन गई।
- काव्यक्षेत्र में प्रसाद की कीर्ति का मूलाधार **'कामायनी'** है। खड़ी बोली का यह अदवितीय महाकाव्य मनु और श्रद्धा को आधार बनाकर रचित मानवता को विजयिनी बनाने का संदेश देता है।
- उनकी यह कृति छायावाद ओर खड़ी बोली की काव्यगरिमा का ज्वलंत उदाहरण है।
- **सुमित्रानन्दन पंत इसे 'हिंदी में ताजमहल के समान' मानते हैं।**

कामायनी

- **कामायनी हिंदी भाषा का एक महाकाव्य है।**
- यह आधुनिक छायावादी युग का सर्वोत्तम और प्रतिनिधि हिंदी महाकाव्य है।
- **प्रसाद जी की यह अंतिम काव्य रचना 1936 ई. में प्रकाशित हुई, परंतु इसका प्रणयन प्राय: 7-8 वर्ष पूर्व ही प्रारंभ हो गया था।**
- 'चिंता' से प्रारंभ कर 'आनंद' तक 15 सर्गों के इस महाकाव्य में मानव मन की विविध अंतर्वृत्तियों का क्रमिक उन्मीलन इस कौशल से किया गया है कि मानव सृष्टि के आदि से अब तक के जीवन के मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास का इतिहास भी स्पष्ट हो जाता है।

कामायनी

- इस कविता को आधार बनाकर इस साल हम अपना वार्षिक उत्सव मना रहें हैं।

कामायनी के सर्गों के नाम:-

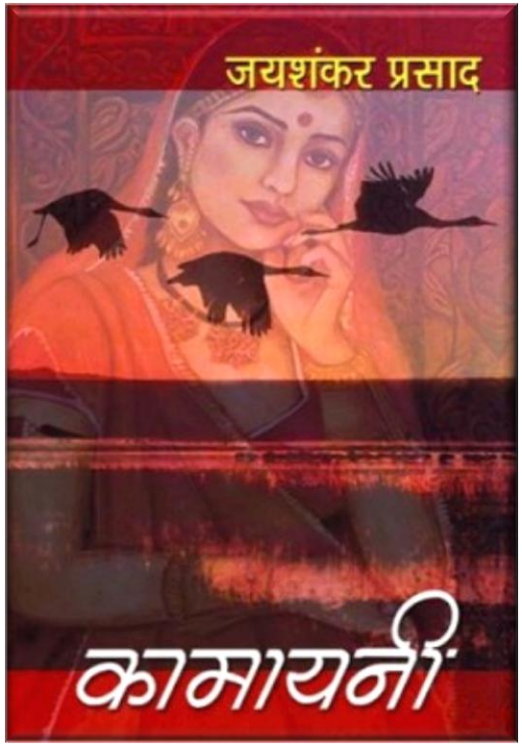

- चिन्ता
- आशा
- श्रद्धा
- काम
- वासना
- लज्जा
- कर्म
- ईर्ष्या
- इडा (तर्क, बुद्धि)
- स्वप्न
- संघर्ष
- निर्वेद
- दर्शन
- रहस्य
- आनन्द

निधन

- जयशंकर प्रसाद जी का देहान्त 15 नवम्बर, सन् 1937 ई. में हो गया।
- प्रसाद जी भारत के उन्नत अतीत का जीवित वातावरण प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे।
- **उनकी कितनी ही कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें आदि से अंत तक भारतीय संस्कृति एवं आदर्शों की रक्षा का सफल प्रयास किया गया है।**
- और '**आँसू**' ने उनके हृदय की उस पीड़ा को शब्द दिए जो उनके जीवन में अचानक मेहमान बनकर आई और हिन्दी भाषा को समृद्ध कर गई।

आत्मकथ्यः कवि श्री जयशंकर प्रसाद

- प्रेमचन्द्र द्वारा संपादित पत्रिका 'हंस' में 'आत्मकथा-विशेषांक' प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।
- प्रसाद जी से आत्मकथ्य लिखने का आग्रह किया गया।
- प्रसाद जी असहमत थे।
- इसी असहमति के तर्क-वितर्क से रचना हुई।
- कवि नें इसमें जीवन के यथार्थ भावों का मार्मिक चित्रण किया है।
- उद्देश्यः साहित्य के माध्यम से इतिहास व दर्शन में रूचि जगृत करना।

धन्यवाद

अध्यापिका- सुमन द्विवेदी